एम० ए० हिन्दी / I सेमेस्टर

डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

तृतीय पत्र

प्रश्न : संत काव्य की सामान्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए उनकी सामाजिक भूमिका को स्पष्ट करें।

उत्तर :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने जिस काव्य परंपरा को निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा कहा है, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी उसे ही 'निर्गुण संतकाव्य' कहते हैं। डॉ० रामकुमार ने इस काव्य को संत काव्यधारा के नाम से पुकारा है। हिन्दी के संत कवियों पर स्पष्ट रूप से निर्गुण नाथपंथी योगियों का स्पष्ट प्रभाव था जो आगे चलकर शंकराचार्य के अद्वैतवाद एवं सूफियों के सूफीवाद से होते हुए योगियों की नाड़ीचक्र-साधना और प्रेम तत्व की गहरी छाप पड़ी थी। वैष्णवों से उन्होंने अहिंसावाद और प्रपत्तिवाद दर्शन ग्रहण किया। नाथ संप्रदाय के योगियों से घट के भीतर इड़ा-पिंगला, सहस्त्रदल आदि रहस्यात्मक संकेतों को ग्रहण किया। निर्गुण शाखा के ऐसे अधिकांश योगी रहस्यवादी हो गए। इन्हीं सारे गुणों को लेकर हिन्दी साहित्य में कबीरदासजी ने 'निर्गुण पंथ' की स्थापना की। कबीर के निर्गुण उपासना में पैगम्बर खुदावाद और शंकर के मायावाद का सम्मिश्रण देखने को मिलता है, किंतु तात्विक दृष्टि से न तो ये पूर्णतः अद्वैतवादी हैं और न एकेश्वरवादी। उनमें भारतीय ब्रह्मज्ञान, योग-साधना का अद्भुत सम्मिश्रण है। इनके उपचारों में रूढ़ियों का निषेध, मूर्तिपूजा का बहिष्कार और आत्मा की शुद्धि पर अधिक जोर दिया गया है। वस्तुतः निर्गुण संत, समाज के सताए व उपेक्षित लोगों का ऐसा वर्ग था जिन्होंने समाज के निम्न जाति

[illegible]

के लोगों से जुड़कर एक नया अलख जगायी, जिससे सोयी हुयी जनता जाग पड़े। यह उस समय के लिए युग परिवर्तन का काम था। संक्षेप में संत काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां निम्नलिखित थीं—

1. संत काव्य में निर्गुण राम की कल्पना की गयी है। निर्गुण ज्ञानियों की दृष्टियों में राम दशरथ के पुत्र नहीं है, बल्कि वह निर्गुण निराकार हैं। राम सर्वव्यापी, अरूप, अवर्ण, अनीह और अकल हैं। उनकी प्राप्ति केवल आत्म से ही हो सकती है। निर्गुणपंथ किसी अवतार में विश्वास नहीं करते। उनका राम अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त वह राम हैं जो पूरे विश्व को स्वर्ग में आख्या करते हुए। सारे विश्व के रक्षक एवं संहारकर्ता हैं। वह अविनाशी हैं, अमर हैं। उनका जन्म नहीं होता। वे प्रकृति के कण-कण में व्याप्त हैं।

संतों की दृष्टि में ईश्वर एक हैं। वह निराकार और अंतर्यामी हैं। वह अनन्त और सर्व-शक्तिमान हैं। हिन्दुओं का ईश्वर और मुसलमानों के अल्लाह में कोई भेद नहीं है। जो राम हैं वही रहीम हैं। विभिन्न धर्मों में जो ईश्वर के स्वरूप का जो भेद दिखलाई देता है, दरअसल, वे विभिन्न मतों एवं पंथों की देन है। ईश्वर तो सबके लिए एक ही हैं और हम उनकी संतान। इसलिए मनुष्य और मनुष्य के बीच भेद करना ना हमारी मूर्खता है बल्कि ईश्वर के प्रति एक अक्षम्य अपराध भी है। ईश्वर तो अपने प्राणियों के बीच कोई भेद नहीं करता, फिर मनुष्य क्यों इतना निर्दयी एवं असहिष्णु है।

निर्गुण पंथ में गुरु के प्रति असीम श्रद्धा व्यक्त की गयी है। गुरु एवं गोविन्द दोनों एक ही हैं। बिना गुरु के सद्भाव के हम संसार के अज्ञात रहस्यों को समझ नहीं सकते। गुरु ही हमें सद्मार्ग, ईश्वर

के प्रति हमारी उत्कंठा को जगाता है। हमें सद्मार्ग की ओर जाने को प्रेरित करता है। गुरु अनन्त एवं प्रकाशमान है। गुरु की अनंत कृपा से ही मन में सद्बुद्धि जाग्रत होती है। सद्गुरु की प्राप्ति ही अमृत तत्व है। वही साधक की परम सिद्धि है। गुरु के ज्ञान के बिना हम उस परम तत्व की अनुभूति नहीं कर सकते जो हमें जीवन के दुखों से छुटकारा दिला सके। गुरु की महिमा अपरम्पार है।

संत कवियों ने अपने काव्य में सामाजिक विषमता एवं जाति-पाँति प्रथा का खुलकर विरोध किया था उन्होंने मानव की समानता के आदर्श को स्थापित करने में अपना पूरा जीवन लगा दिया। उन्होंने न केवल धर्मान्ध शासकों को फटकार लगायी बल्कि हिन्दुओं को भी ऊँच-नीच, छुआछूत और कोरे ढोंग के लिए धिक्कारा। उन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों से कहा- चाहे वह ऊँच हो या नीच, धनी हो या निर्धन सभी में एक ही परमात्मा का वास है इसलिए जाति या सम्प्रदाय के आपसी झगड़े में पड़कर लोग एक दूसरे से घृणा न करें। घृणा के स्थान पर प्रेम और विवादों की जगह समन्वय ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है। इस प्रकार संत कवियों ने समाज को एक नया रास्ता दिखलाने का कार्य किया। उन्होंने बिखरे हुए समाज को एक नए सूत्र में जोड़ने की कोशिश की। इस दिशा में उनके द्वारा किया गया कार्य नव जागरण से कम न था।

संत काव्य की एक और विशेषता है, उसका रहस्यवाद। रहस्यवाद में एक ईश्वर की कल्पना की गयी है। जीवात्मा चूँकि परमात्मा का ही एक अंश है, इसलिए जीवात्मा उस परम तत्व से एकाकार होना चाहता है। चूंकि ईश्वर निराकार है, अनन्य है, इसलिए उससे मिलने के लिए बराबर प्रयत्न करती है। ईश्वर की समीपता के अभाव में यह आत्मा विरह में तड़पती रहती है। इसे ही रहस्यवाद कहा गया है। रहस्यवाद जीवात्मा के उस प्रयत्न के प्रकाशन का नाम है जब वह परम तत्व से

P.T.O

एकाकार होना चाहता है। इस रहस्यवाद में प्रेम की प्रधानता है।

"अकथ कहानी प्रेम की कछु कही न जाय।
गूंगा केरि सरकरा बैठा ही मुस्काय॥"

संत काव्य में नाम स्मरण एवं माया का भी विशेष रूप से महत्व है। इस नाम स्मरण की पद्धति में प्रदर्शन-वृत्ति का कोई स्थान नहीं है। नाम स्मरण सर्वथा अंतर्मुखी एवं साधनारत होना चाहिए। यही क्रिया के का कोई भी प्रयत्न बुरा है। नाम स्मरण के द्वारा मन को शांत एवं अंतर्मुखी होना पड़ता है इससे बुरे कर्मों से निवृत्ति होती है और आत्मा की शुद्धि होती है। इसलिए निर्गुण पंथ में नाम स्मरण को विशेष महत्व दिया गया है।

निर्गुण पंथ में नारी को माया माना गया है। माया तरह-तरह से मन को भटकाने का काम करती है ताकि भक्त अपनी भक्ति मार्ग से विचलित हो जाए। यह सर्वनाश का आयोजन करती है। माया के कारण ही जगत सच्चा एवं परम तत्व झूठा दिखलाई पड़ता है। माया ही लक्ष्मी बनकर मोह-माया के जाल में मनुष्य को उलझाती है और बड़े संन्यासियों को अपनी काम-वासना के जाल में फंसाकर उसकी तपस्या को भंग कर देती है। माया विकार की खान है, भक्ति-मार्ग का सबसे बड़ा रोड़ा, इसलिए संत कवियों ने भक्त के लिए माया को त्याज्य बताया है।

अंत में संत काव्य की भाषा-शैली पर प्रकाश डालना समीचीन प्रतीत होता है। संत कवियों की भाषा को साधुक्कड़ी एवं खिचड़ी भाषा कहा गया है। चूंकि संत कवि कोई ज्यादा पढ़े-लिखे न थे, इसलिए व्याकरण सम्मत भाषा की उनसे अपेक्षा भी नहीं की जा सकती। फिर भी उनकी भाषा में एक ताजगी दिखलाई देती है। उन्होंने अपने काव्य में जनभाषा का प्रयोग किया जो कई भाषाओं का सम्मिश्रण है। उनकी भाषा में पंजाबी, अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी एवं अरबी-फारसी एवं खड़ी-बोली का सम्मिश्रण दिखलाई पड़ता है। उनकी भाषा सहज